उ0प्र0 माध्यमिक संस्कृत शिक्षा परिषद, शाहमीना रोड, लखनऊ
शैक्षिक सत्र 2025–26 में सम्पादित किये जाने वाले कार्यों का वार्षिक कलैण्डर

माह	माहवार सम्पादित किये जाने वाले कार्यों का विवरण	अवधि
अप्रैल 2025	1– प्रवेश उत्सव। 2– विद्यालय में शैक्षिक वातावरण सृजन हेतु शैक्षिक पंचाग का निर्माण 3– पूर्व मध्यमा से उत्तर मध्यमा स्तर तक की बोर्डपरीक्षा का मूल्यांकन कार्य। 4– पाठ्यक्रम का माहवार विभाजन एवं विद्यालयों को प्रेषण 5– श्री महावीर जयन्ती, अम्बेडकर जयन्ती, विश्व स्वास्थ्य दिवस एवं आयुष्मान भारत दिवस आदि का आयोजन	सम्पूर्ण माह प्रथम सप्ताह प्रथम सप्ताह प्रथम सप्ताह निर्धारित दिवसों में
मई 2025	1– परीक्षा परिणाम की घोषणा। 2– परीक्षाफल जिला विद्यालय निरीक्षक के माध्यम से वितरण। 3–परीक्षार्थियों को बोर्ड परीक्षा का परीक्षाफल प्राप्त कराना। 4– शिक्षक अभिभावक बैठकों का अनुश्रवण एवं जनजागरण 5– सन्नीरीक्षा के इच्छुक छात्र/छात्राओं के आवेदन पूरित कर परिषद कार्यालय को भेजना। 6– डिप्लोमा पाठ्यक्रमों के द्वितीय सेमेस्टर की परीक्षाहेतु केन्द्रों का निर्धारण एवं केन्द्रों को गोपनीय सामग्री का प्रेषण। 7– बुद्ध पूर्णिमा, महाराणा प्रताप जयन्ती एवं मातृ दिवस के आयोजन का अनुश्रवण	प्रथम सप्ताह द्वितीय सप्ताह तृतीय सप्ताह चतुर्थ सप्ताह चतुर्थ सप्ताह चतुर्थ सप्ताह निर्धारित दिवसों में।
जून 2025	1– सन्निरीक्षा आवेदन पत्रों का परिषद स्तर पर संकलन 2– संस्कृत माध्यमिक विद्यालयों में पौरोहित्य, ज्योतिष, योग विज्ञान, वास्तुशास्त्र में डिप्लोमा पाठ्यक्रमों के द्वितीय सेमेस्टर की परीक्षा का आयोजन। 3– डिप्लोमा पाठ्यक्रमों के द्वितीय सेमेस्टर की परीक्षा का मूल्यॉकन कार्य। 4– डिप्लोमा पाठ्यक्रमों के द्वितीय सेमेस्टर की परीक्षा का परिणाम घोषित करना। 3– विश्व पर्यावरण दिवस, विश्व रक्तदान दिवस, अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन एवं अनुश्रवण	प्रथम एवं द्वितीय सप्ताह द्वितीय सप्ताह तृतीय सप्ताह चतुर्थ सप्ताह निर्धारित दिवसों में।
जुलाई 2025	1– डिप्लोमा पाठ्यक्रमों में प्रवेश। 2– द्वितीय प्रवेश उत्सव। 3– सन्निरीक्षा का कार्य 4– अकेडमिक कलैण्डर पर चर्चा एव शैक्षिक सत्र हेतु पठन–पाठन की रणनीति तय करना। 5– विश्व प्राकृतिक संरक्षण दिवस, विश्व जनसंख्या दिवस पर व्याख्यान।	सम्पूर्ण माह सम्पूर्ण माह सम्पूर्ण माह जुलाई के मासान्त में। तृतीय एवं चतुर्थ सप्ताह निर्धारित दिवसों में।
अगस्त 2025	1– राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं राष्ट्रीय पाठ्यचर्या कार्यक्रम पर शिक्षकों को जागरूक करना। 2–पूर्व मध्यमा एवं उत्तर मध्यमा एवं डिप्लोमा की परीक्षाओं हेतु पंजीकरण करने की तिथि ।	प्रथम एवं द्वितीय सप्ताह द्वितीय/तृतीय सप्ताह

	3–श्रावणी उपाकर्म/संस्कृत सप्ताह के आयोजन का अनुश्रवण। 4– राष्ट्रीय हथकरघा दिवस, स्वतंत्रता दिवस, संस्कृत दिवस के आयोजन पर प्रतियोगिता।	03 अगस्त से 09 अगस्त 2025 निर्धारित दिवसों में
सितम्बर 2025	1– आवेदन पत्र पूर्ण करने एवं परीक्षा शुल्क जमा करना 2– त्रैमासिक परीक्षा। 3– शिक्षक दिवस, विश्व साक्षरता दिवस एवं हिन्दी दिवस के अवसर पर प्रतियागिताओं का आयोजन। 4– त्रैमासिक परीक्षा का परिणाम छात्रों को उपलबध कराना।	सम्पूर्ण माह द्वितीय एवं तृतीय सप्ताह निर्धारित दिवसों में सितम्बर मासान्त में।
अक्टूबर 2025	1– आवेदन पत्रों में त्रुटि सुधार । 2– परीक्षा आवेदन पत्रादि जिला विद्यालय निरीक्षक कार्यालय में जमा कराना। 3– जिला विद्यालय निरीक्षक कार्यालय से संकलित संख्या सूचक चक्र के साथ आवेदन पत्राादि परिषद कार्यालय में जमा कराना। 4– गांधी जायन्ती, शास्त्री जयन्ती, महर्षि बाल्मीकि जयन्ती का आयोजन। 5–परीक्षा केन्द्र नीति निर्धारित ।	प्रथम एवं द्वितीय सप्ताह तृतीय सप्ताह चतुर्थ सप्ताह निर्धारित दिवसों में चतुर्थ सप्ताह
नवम्बर 2025	1– परीक्षा आवेदन पत्रों के परीक्षण। 2– नामावली /संख्या सूचक में परिलक्षित त्रुटियों के सुधार हेतु विद्यालय को नामावली का प्रेषण 3– डिप्लोमा पाठ्यक्रम की मान्यता प्रदान करना। 4–– अर्धवार्षिक परीक्षा का आयोजन। 5– राष्ट्रीय बाल दिवस एवं गुरू तेगबहादुर शहीदी दिवस का आयोजन 6– उततर पुस्तिका एवं प्रश्नपत्रों की व्यवस्था	सम्पूर्ण माह अन्तिम सप्ताह तृतीय सप्ताह चतुर्थ सप्ताह निर्धारित दिवसों में सम्पूर्ण माह
दिसम्बर 2025	1– एक भारत श्रेष्ठ भारत के अन्तर्गत दूसरी भाषाओं में बातचीत करना सिखाना। 2– निर्वाचन साक्षरता क्लब को सक्रिय कराकर गतिविधियों का आयोजन कराना। 3– अर्द्धवार्षिक परीक्षा का परिणाम छात्रों को वितरित करना 4– संशोधित नामावली सुधार हेतु परिषद को प्राप्त कराना 3– प्री बोर्ड परीक्षा का आयोजन। 4– शिक्षक अभिभावक संघ की बैठक/अनुश्रवण 5– मानवाधिकार दिवस, विश्व उर्जा संरक्षण दिवस एवं राष्ट्रीय गणित दिवस पर विभिन्न आयोजन।	सम्पूर्ण माह सम्पूर्ण माह प्रथम सप्ताह प्रथम सप्ताह तृतीय एवं चतुर्थ सप्ताह चतुर्थ सप्ताह निर्धारित दिवसों में
जनवरी 2026	1– डिप्लोमा पाठ्यक्रम द्वितीय सेमेस्टर की कक्षाओं का प्रारम्भ। 2– परीक्षा वर्ष 2026 हेतु परीक्षा केन्द्रों, मूल्यांकन केन्द्रों, संकलन केन्द्रों को अन्तिम रूप दिया जाना। 3– प्रयोगात्मक परीक्षाओं के आयोजन की व्यवस्था। 4– पाठ्यक्रम के रिवीजन कार्य का अनुश्रवण	01 जनवरी 2026 द्वितीय सप्ताह तृतीय सप्ताह चतुर्थ सप्ताह निर्धारित दिवसों में।

	5– विश्व हिन्दी दिवस, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस जयन्ती , राष्ट्रीय मतदाता दिवस, उत्तर प्रदेश दिवस एवं गणतंत्र दिवस का आयोजन	
फरवरी 2026	1– सतत् मूल्यांकन के अंकों को वेबसाइट पर अपलोड करना। 2– परीक्षा प्रयोगार्थ उत्तर पुस्तिकाएं/गोपनीय सामग्री आदि प्रदेश के जनपदों में आपूर्ति। 3– प्रवेश पत्र डॉउनलोड करने की तिथि 4– विद्यालय /केन्द्र प्रयोगार्थ नमावली/फोटोयुक्त उपस्थिति पत्रक परिषद कार्यालय से प्राप्त कराना । 5– बोर्ड परीक्षाओं का आयोजन	01 से 10 फरवरी 2026 द्वितीय सप्ताह द्वितीय सप्ताह द्वितीय सप्ताह तृतीय सप्ताह
मार्च 2026	1– बोर्ड परीक्षाओं का आयोजन 2– विद्यालय स्तर पर वार्षिक गृह परीक्षा का आयोजन 3– गृह परीक्षा का परीक्षाफल वितरण। 4– संस्कृत बोर्ड परीक्षा मूल्यांकन कार्य।	प्रथम सप्ताह द्वितीय सप्ताह 31 मार्च 2026 अन्तिम सप्ताह

गुणवत्ता संवर्धन हेतु नियोजन

- शैक्षिक सत्र दिनांक 01 अप्रैल 2025 से 31 मार्च 2026 तक रहेगा ।
- प्रत्येक विद्यालय मे प्रवेश एक उत्सव के रूप मे मनाया जाएगा , जिसका पहला चरण 01 अप्रैल से 30 अप्रैल एवं दूसरा चरण 01 जुलाई से 15 जुलाई 2025 तक सम्पन्न होगा ।
- सघन अभियान चलाकर प्रत्येक विद्यालय मे प्रवेश की कार्यवाई की जाएगी तथा यह सुनिश्चित किया जाएगा की प्रत्येक कक्षा मे मानक के अनुरूप छात्र छात्राओं का प्रवेश अवश्य हो जाए । इस अभियान मे विद्यालय का स्टाफ अभिभावकों से संपर्क एवं उनके साथ गोष्ठी आदि का आयोजन करेगा । इस अभिप्रेरण एवं प्रवेश अभियान का नेतृत्व मण्डल के उप निरीक्षक संस्कृत पाठशालाएं द्वारा किया जाएगा।
- विद्यालय मे प्रत्येक दिवस पठन–पाठन प्रारंभ करने के पूर्व 20 मिनट प्रथन सभा के लिए निर्धारित रहेंगे, जिसमे ईश वंदना, राष्ट्रगान, योगासन के साथ ही "आज का सुविचार " शीर्षक के अंतर्गत प्रेरणादायी विचारों की प्रस्तुति होगी । इस सभा मे विचारों की प्रस्तुति के लिए छात्र छात्राओं को भी प्रेरित किया जाएगा ।
- आज का सुविचार प्रभावी बनाने हेतु एक पंजिका मे प्रतिदिन प्रस्तुतकर्ता का नाम एवं प्रस्तुत विषय वस्तु का सारांश अंकित किया जाएगा तथा माह के अंतिम दिवस प्रार्थना स्थल पर प्रथम स्थान पाने वाले विचार के प्रस्तुकर्ता को पुरस्कृत किया जाएगा ।
- एक भारत श्रेष्ठ भारत के अंतर्गत भाषा संगम हेतु संविधान मे वर्णित भाषाओं मे एक दूसरे से परिचय क अभ्यास कराया जाएगा, जिससे विद्यार्थी अपनी मातृभाषा के साथ ही अन्य भाषाओं मे भी ज्ञानार्जन कर सकेंगे । विद्यालय मे होने वाली सांस्कृतिक प्रस्तुति मे भी दूसरी भाषा के कार्यक्रमों को स्थान दिया जाएगा

- विद्यालय की समय–सारिणी आठ कालांश मे विभाजित की जाएगी । प्रत्येक कालांश ग्रीष्मकाल मे 35 मिनट तथा शीतकाल मे 40 मिनट एवं मध्यावकाश 25 मिनट का होगा । यह समय–सारिणी प्रत्येक कक्षा मे प्रदर्शित की जाएगी ।
- विद्यालय की समय–सारिणी में प्रत्येक कक्षा के लिए पुस्तकालय वाचनालय सुविधा का उपयोग करने हेतु व्यवस्था दी जाएगी । यह सुनिश्चित किया जाएगा कि प्रत्येक विद्यार्थी सप्ताह मे काम से काम एक दिन अवश्य पुस्तकालय का उपयोग करे । विद्यार्थी द्वारा पढ़ी गई पुस्तक की विषय वस्तु पर चर्चा प्रार्थना सभा मे करने का अवसर दिया जाएगा ।
- शैक्षिक गुणवत्ता एवं शिक्षा मनोविज्ञान की दृष्टि से कठिन विषय का कालांश पहले और सरल विषय का बाद मे रखा जाएगा । परंपरागत विषयों का शिक्षण पूर्वाह्न में तथा आधुनिक विषयों का शिक्षण अपराह्न मे रखा जाना उपयोगी रहेगा ।
- शिक्षण अधिगम विधा मे आमने सामने बैठकर पठन–पाठन के साथ ही अन्य विधाओं यथा दूरदर्शन प्रसारण , आडियो विडिओ एवं ऑनलाइन शिक्षण तकनीक का भी उपयोग किया जाएगा ।
- विभिन्न सरकारी एवं लाभकारी योजनाओं की जानकारी के लिए समय दृ समय पर अनुभवी लोगों के व्याख्यान आयोजित किए जाएंगे । स्थानीय कामगारों से संदर्भ सेवाएं ली जाएंगी जिससे कि रोजगार संबंधी कौशल संवर्धन में सहायता मिलेगी। स्थानीय कुटीर उद्योग का व्यावहारिक प्रदर्शन भी कराया जाएगा ।
- निरोगी काया के लिए उपयोगी चिकित्सा एवं परामर्श संबंधी सेवाओं से छात्र छात्राओं को लाभान्वित कराया जाएगा ।
- छात्र छात्राओं के समग्र विकास के लिए उनमें निहित क्षमताओं की पहचान कर सीखने की प्रक्रिया को आनंददाई बनाया जाएगा । विद्यालय मे प्रति सप्ताह एक दिन इस हेतु कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे । विद्यालय के सभी शिक्षक अलग अलग क्षेत्रों में छात्र छात्राओं का मार्गदर्शन करेंगे।
- प्रत्येक विद्यालय में पर्यावरण क्लब , निर्वाचन साक्षरता क्लब , स्काउट गाइड आदि की सहायता से सम – सामयिक महत्व के विषयों पर कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे । विद्यालय के सभी विद्यार्थी किसी न किसी कार्यक्रम में प्रतिभाग करेंगे । निर्वाचन साक्षरता के लिए विषय वस्तु, निर्वाचन विभाग की वेबसाईट पर प्रत्येक कक्षा के अनुरूप उपलब्ध है, वहाँ से ली जा सकती है ।
- छात्र छात्राओं में सृजनात्मक कौशल एवं वैज्ञानिक अभिवृत्ति और अभिरुचि विकसित करने के लिए सप्ताह में एक दिन प्रतियोगिता आयोजित की जाएंगी जिसमें खेलकूद, वाद दृ विवाद , व्याख्यान, निबंध लेखन , भित्ति चित्र बनाना, नाटक मंचन आदि सम्मिलित होंगे ।
- संस्कृत विद्यालय के प्रधानाचार्य एवं सभी शिक्षक एक दैनंदिनी बनाएंगे जिसमें उनके द्वारा शिक्षण का नियोजन एवं अनुभूत कठिनाइयों का विवरण तथा समाधान अंकित किया जाएगा । यह दैनंदिनी विद्यालय आने वाले उच्चाधिकारी को दिखाई जाएगी । निरीक्षण करने वाले अधिकारी के सुझाव भी यथा स्थान अंकित करके पालन किया जाएगा ।
- प्रत्येक माह के अंतिम कार्य दिवस में अंतिम वादन में प्रधानाचार्य द्वारा इन हाउस बैठक का आयोजन किया जाएगा । इस बैठक में सम्पन्न कार्यों की

समीक्षा एवं आगामी कार्यों का नियोजन प्रमुख होगा । इस बैठक में प्रत्येक कक्षा के मेधावी छात्र प्रतिनिधि भी सम्मिलित रहेंगे ।

- विद्यालय में राष्ट्रीय पर्व एवं महापुरुषों के जन्म दिवस/जयंती मनाए जाएंगे जिसमें प्रतियोगिता एवं जागरूकता कार्यक्रम प्रमुख होंगे । यथा 21 जून को योग दिवस, 21 अगस्त को वरिष्ठ नागरिक दिवस, 14 नवंबर बाल दिवस , 03 दिसंबर को दिव्या[3] दिवस, 23 दिसंबर को गणितज्ञ रामानुज का जन्म दिवस, 24 जनवरी उत्तर प्रदेश दिवस एवं 25 जनवरी मतदाता दिवस आदि ।
- डिजिटल साक्षरता एवं साइबर क्राइम के विभिन्न पहलुओं पर जानकारी के लिए एक्सपर्ट व्यक्तियों की वार्ता कराई जाएगी तथा साइबर क्राइम से बचने के लिए किए जाने वाले विभिन्न उपायों पर विस्तार से ज्ञानार्जन कराया जाएगा ।
- सीखने की प्रक्रिया के केंद्र में देखभाल का महत्वपूर्ण स्थान है। विषय वस्तु, शिक्षण अधिगम योजना एवं प्रक्रिया के रूप में यह परिलक्षित होती है । राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में एक अच्छी शिक्षा व्यवस्था में इसका उल्लेख किया गया है । निरीक्षक, संस्कृत पाठशालाएं, उत्तर प्रदेश, प्रयागराज द्वारा निर्गत अवकाश तालिका एवं संबंधित जनपद के जिलाधिकारी द्वारा निर्गत अवकाश तालिका के अनुसार विद्यालय अवकाश का उपभोग करेंगे ।

o श्रावण मास में संस्कृत सप्ताह का आयोजन धूमधाम से किया जाएगा । इसका समापन रक्षा बंधन के दिन श्रावणी पर्व के रूप मे होगा । वर्ष 1969 में शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार ने रक्षा बंधन के दिन संस्कृत दिवस के आयोजन का निर्णय लिया था । संस्कृत सप्ताह के अवसर पर आयोजित होने वाले कार्यक्रमों का प्रस्तावित विवरण इस प्रकार है –

प्रथम दिवस

- **माँ सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण, वंदना एवं दीप प्रज्जवलन के साथ संस्कृत सप्ताह का शुभारंभ तथा आयोजन के महत्त्व पर चर्चा ।**
- **संस्कृत भाषा से संबंधित साहित्य एवं विभिन्न ग्रंथों, पुस्तकों आदि सामग्री की प्रदर्शनी का आयोजन ।**
- **संस्कृत भाषा में एक दूसरे का परिचय एवं अभिवादन एवं कविता पाठ ।**
- **संस्कृत गीतं (संस्कृत भाषा मे कोई भी गीत)**

द्वितीय दिवस

- **संस्कृत की महत्ता पर छात्र छात्राओं की अभिव्यक्ति एवं संस्कृत भाषा में सृजनात्मक लेखन कार्य । प्रस्तावित विषय –**

1- भारतीय संस्कृति पर संस्कृत का प्रभाव ।

2- संस्कृत और संस्कार ।

3- जननी के रूप में संस्कृत भाषा ।

4- नैतिक मूल्यों के संवर्धन में संस्कृत की भूमिका ।

5- संस्कृत कथावाचनम प्रतियोगिता (कोई भी मौलिक कथा)

तृतीय दिवस

- **संस्कृत संभाषण (संस्कृत जीवन मूल्यनाम विज्ञानस्य प्रचारह प्रसारस्य)।**

□ संस्कृत श्लोकों एवं ऋचाओं का सस्वर वाचन तथा हिन्दी में उनका अर्थ बताना ।

□ संस्कृत भाषा में नाटकों का मंचन ।

चतुर्थ दिवस

□ सेवानिवृत्त, संस्कृत के वरिष्ठ शिक्षकों का सम्मान तथा उनके साथ संस्कृत भाषा अध्ययन का व्यावहारिक जीवन में महत्व विषय पर परिचर्चा ।

□ संस्कृत में काव्य रचना विशेषकर छोटी कविताओं की रचना सीखना एक प्रतियोगिता के रूप में ।

□ "भारत का संविधान" में वर्णित मूल कर्तव्यों के प्रति छात्र छात्राओं को जागरूक करना ।

पंचम दिवस

□ कालिदास, पाणिनी, महर्षि वेदव्यास, बाल्मीकि, आदि संस्कृत की महान विभूतियों की कृतियों के महत्त्वपूर्ण अंशों पर व्याख्यान ।

□ हिन्दी की छोटी छोटी कहानियों का संस्कृत में अनुवाद करने की प्रतियोगिता ।

□ पुरानेतिहास विषय की विषय वस्तु का मोटवैशन प्रवचन में उपयोग करने की प्रतियोगिता ।

"ाष्ठम् दिवस

□ वेद, उपनिषद, ब्राह्मण ग्रंथ, आरण्यक आदि को आधार बनाकर विद्वानों के विचार आमंत्रण ।

□ सम– सामयिक विषयों, यथा दृ संस्कृत एवं विज्ञान का संबंध, पर्यावरण, स्थानीय त्योहार एवं मेले आदि, पर संस्कृत भाषा में संगोष्ठी का आयोजन ।

□ सुभाषित कण्ठ पाठ स्पर्धा (कोई भी संस्कृत सुभाषित)

सप्तम दिवस

□ संस्कृत सप्ताह में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की झलकियों पर संक्षिप्त प्रस्तुतीकरण ।

□ ग्रामध्कस्बा के सम्मानित नागरिकों एवं जनप्रतिनिधिओं तथा संस्कृत विद्वानों को आमंत्रित कर संस्कृत सप्ताह का समापन ।

□ स्थानीय स्तर पर रैली का आयोजन । संस्कृत भाषा में लिखे नारे एवं स्लोगन का उच्च स्वर मे वाचन ।

□ संस्कृत भाषाविद् पाणिनि ने अष्टाध्यायी (आठ अध्याय) नामक एक व्याकरण मार्गदर्शिका लिखी। वह बोली जाने वाली संस्कृत को समझने में दुनिया के लिए एक पथप्रदर्शक थे। उनके योगदान पर प्रकाश डाला जाए ।

विद्यालय संस्कृति एवं प्रक्रियाएं

स्कूल संस्कृति और प्रक्रियाओं का छात्रों के सीखने पर प्रत्यक्ष और महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। इस प्रकार, शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने में सक्षम बनाने के लिए इन्हें व्यवस्थित और सावधानीपूर्वक पोषित और आकार दिया जाना चाहिए। स्कूल संस्कृति दो महत्वपूर्ण तरीकों से सीखने को प्रभावित करती है। सबसे पहले, यह सभी छात्रों के लिए एक प्रभावी सीखने के माहौल को सक्षम बनाता है। दूसरा, मूल्यों और स्वभावों के विकास पर इसका महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। स्कूल संस्कृति के दो पहलू हैं।

पहला पहलू मूल्य, मानदंड और विश्वास है – जो स्कूल संस्कृति का निर्माण करते हैंय और
दूसरा पहलू व्यवहार, रिश्ते और प्रथाएं हैं – जिसमें संस्कृति प्रकट और अनुभवी है। संस्कृति और इसकी अभिव्यक्ति बनाने वाले तत्व गहराई से एकीकृत हैं। छात्र अभिव्यक्तियों से सीखते हैं और उनसे प्रभावित होते हैं।

इन अभिव्यक्तियों को तीन श्रेणियों में देखा जा सकता है – स्कूल में लोगों के बीच संबंध, प्रदर्शित प्रतीक और मनाए जाने वाले उत्सव , और स्कूल की व्यवस्था एवं प्रथाएं। एक सक्षम सीखने के माहौल को विकसित करने और उनको व्यवस्थित करने के प्रयास को छात्रों के बीच वांछनीय मूल्यों और प्रवृत्तियों के विकास के लिए इन अभिव्यक्तियों को आकार देना चाहिए।

शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए, स्कूल संस्कृति के घटक तत्वों में कुछ विशेषताएं होनी चाहिए।

i- रिश्तों में आपसी विश्वास होना चाहिए और खुलेपन, संचार और सहयोग के साथ–साथ देखभाल और जिम्मेदारी के साथ सम्मानजनक होना चाहिए।

पप. प्रतीकों को वांछित मूल्यों और स्वभावों को सोच–समझकर उजागर करना चाहिए और उनका जश्न मनाना चाहिए।

पपप. स्कूल की व्यवस्था और प्रथाओं को इन वांछित मूल्यों को प्रकट करना चाहिए, जिसमें कक्षा प्रथाओं, स्कूल असेंबली, भोजन की व्यवस्था, काम का वितरण, खेल गतिविधियों और माता–पिता, परिवार और समुदाय के साथ जुड़ाव शामिल है।

स्कूल प्रक्रियाओं को दो चीजें सुनिश्चित करनी चाहिए – दिन–प्रतिदिन की गतिविधियों का सुचारू संचालन और पाठ्यचर्या लक्ष्यों की प्राप्ति की दिशा में प्रगति को सक्षम बनाना। स्कूल प्रक्रियाओं को मोटे तौर पर निम्नलिखित श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता हैरू

1-पाठ्यचर्या प्रक्रियाएं, जिसमें स्कूल की समय सारिणी, विद्यालय सभा, पुस्तकालय से संबंधित, छात्र समितियां, और मंच, कार्यक्रम और समारोह शामिल हैं।

2-पाठ्यक्रम से जुड़ी प्रक्रियाएं, जिनमें शिक्षक सहयोग और व्यावसायिक विकास से संबंधित शामिल हैंय माता–पिता, परिवारों और समुदायों के साथ जुड़नाय। और भोजन, स्वास्थ्य और स्वच्छता।

3-संगठनात्मक प्रक्रियाएं, जिसमें स्कूल विकास योजनाएं, समय और संसाधन आवंटन, छात्र सुरक्षा, मतभेदों और अनुशासनात्मक मुद्दों को हल करना, और डेटा प्रबंधन और रिपोर्टिंग शामिल हैं। मूल्य और प्रवृत्तियाँ छात्रों को श्बतानाश कि उन्हें किन मूल्यों को विकसित करना चाहिए या बनाए रखना चाहिए, आमतौर पर बहुत कम प्रभाव पड़ता है। यह या तो श्उबाऊश हो जाता है या इसे श्उपदेशश के रूप में माना जाता है। स्कूली शिक्षा में मूल्यों और प्रवृत्तियों का विकास मुख्य रूप से निम्नलिखित तरीकों से होता हैरू

1.

2. स्कूल और कक्षा संस्कृति के माध्यम सेरू दूसरों के लिए संवेदनशीलता और सम्मान को प्रोत्साहित किया जाता है जब सभी छात्रों को गतिविधियों में भाग लेने के अवसर प्रदान किए जाते हैं और चुनिंदा छात्र सभी गतिविधियों में भाग नहीं लेते हैं। छात्र अनुकरणों को देखकर भी सीखते हैं।

3. स्कूल और कक्षा प्रथाओं के माध्यम सेरू विशेष मूल्यों के बारे में अनुकरणों को देखना, कहानियों को सुनना ध पढ़ना, या बाल सभाओं और बाल पंचायतों में भाग लेना जो लोकतंत्र, न्याय और समानता की धारणाओं के निर्माण में मदद करते हैं।

4. स्कूल विषयों के माध्यम से सीखने के हिस्से के रूप मेंरू प्रयोगशाला प्रयोग और परीक्षण वैज्ञानिक स्वभाव और सोच बनाने में मदद करते हैं। कुछ स्कूल विषयों के प्रत्यक्ष लक्ष्यों के रूप मेंरू खेल और खेल के दौरान अनुग्रह के साथ जीतना और हारना सीखना लचीलापन बनाने में मदद करता है।

कुछ मूल्यों को विशेष प्रक्रियाओं के माध्यम से बेहतर विकसित किया जाता हैय उदाहरण के लिए,

1. कक्षा संस्कृति और प्रक्रियाओं के हिस्से के रूप में सक्रिय श्रवण के साथ नियमित संवाद और चर्चा लोकतांत्रिक मूल्यों (जैसे, बहुलवाद, समानता, न्याय, बंधुत्व) और दूसरों के दृष्टिकोण की सराहना विकसित करने में मदद करेगी।

2. कला शिक्षा और शारीरिक शिक्षा और कल्याण जैसे पाठ्यचर्या क्षेत्र व्यक्तिगत गुणों (जैसे, ईमानदारी, साहस, दृढ़ता, टीम वर्क, सहानुभूति, दूसरों के लिए सम्मान) बनाने में मदद करेंगे।

3. विज्ञान और गणित जैसे पाठ्यचर्या क्षेत्र महामारी मूल्यों (जैसे, वैज्ञानिक स्वभाव, तर्क में कठोरता) बनाने में मदद करेंगे।

4. स्कूल संस्कृति और प्रथाओं के हिस्से के रूप में सामुदायिक सेवा के माध्यम से महत्वपूर्ण दिनों को चिह्नित करने से सांस्कृतिक मूल्यों (जैसे, निष्काम कर्म, सेवा, अहिंसा, शांति) और अपने स्वयं के और दूसरे की सांस्कृतिक परंपराओं के प्रति सम्मान बनाने में मदद मिलेगी। कक्षा और स्कूल परिसर को साफ सुथरा रखना स्वच्छता के महत्व को पुष्ट करता है। स्कूलों में कम करने, पुनर्चक्रण और अन्य हरित प्रथाओं का अभ्यास करने से पर्यावरण और टिकाऊ जीवन शैली के साथ सद्भाव को बढ़ावा मिलता है।

5. स्कूल असेंबली में नियमित अभ्यास भारत की सांस्कृतिक एकता और विविधता में गर्व को बढ़ावा देने में मदद करेगा।

भाषासु मुख्या मधुरा दिव्या गीर्वाणभारती।
तत्रापि काव्यं मधुरं तस्मादपि सुभाषितम॥
सभी भाषाओं में सबसे मुख्य, मधुर और दिव्य देवभाषा 'संस्कृत' है।
उसमें भी काव्य और काव्य में भी सबसे मधुर सुभाषित वचन होते हैं।

विषयों का ग्रुप

पूर्व मध्यमा	उत्तर मध्यमा
प्रथम प्रष्न पत्र–(अनिवार्य) अनिवार्य संस्कृत	**प्रथम प्रष्न पत्र–(अनिवार्य)** अनिवार्य संस्कृत
द्वितीय प्रष्न पत्र–(कोई एक) 1.ऋग्वेद , 2. शुक्ल यजुर्वेद 3. कृष्ण यजुर्वेद, 4. सामवेद 5. अथर्ववेद, 6. प्राचीन व्याकरण 7. नव्य व्याकरण 8. साहित्य 9. दर्शन 10. न्याय शास्त्र 11.थेरवाद एवं बौद्ध दर्शन 12. ज्योतिष 13. जैनदर्शन 14. पुराणेतिहास 15. प्राकृत एवं जैनागम 16. आयुर्वेद	**द्वितीय प्रष्न पत्र–(कोई एक)** 1.ऋग्वेद, 2. शुक्ल यजुर्वेद 3. कृष्ण यजुर्वेद, 4. सामवेद 5. अथर्ववेद, 6. प्राचीन व्याकरण 7. नव्य व्याकरण 8. साहित्य 9. दर्शन 10. न्याय शास्त्र 11.थेरवाद एवं बौद्ध दर्शन 12. ज्योतिष 13. जैनदर्शन 14. पुराणेतिहास 15. प्राकृत एवं जैनागम 16. आयुर्वेद
तृतीय प्रष्न पत्र–(कोई एक) 1. हिन्दी 2. नेपाली 3. पालि 4. प्राकृत	**तृतीय प्रष्न पत्र–(कोई एक)** 1. हिन्दी 2. नेपाली 3. पालि 4. प्राकृत
चतुर्थ प्रष्न पत्र–(अनिवार्य) सामाजिक विज्ञान	**चतुर्थ प्रष्न पत्र–(कोई एक)** 1. समाज शास्त्र 2. राजनीति विज्ञान 3. गृह विज्ञान 4. पौरोहित्य 5. गणित
पंचम प्रष्न पत्र–(कोई एक) 1. विज्ञान 2. वाणिज्य 3. पौरोहित्य	**पंचम प्रष्न पत्र–(कोई एक)** 1.अर्थशास्त्र 2.शिक्षा शास्त्र 3.इतिहास 4.भूगोल 5.कम्प्यूटर विज्ञान 6.इतिहास पुराण एवं संस्कृति
षष्ठम् प्रष्न पत्र–(कोई एक) 1.गणित 2.गृह विज्ञान 3.इतिहास पुराण एवं संस्कृति 4.कम्प्यूटर विज्ञान	**षष्ठम् प्रष्न पत्र–(कोई एक)** 1.तुलनात्मक दर्शन 2.चित्रकला 3.वाद्य संगीत(सितार) 4.वाद्य संगीत(तबला) 5.कण्ठ संगीत 6.अंग्रेजी 7.योग
सप्तम प्रष्न पत्र (कोई एक) 1.चित्रकला 2.तुलनात्मक दर्शन 3.कण्ठ संगीत 4.वाद्य संगीत (तबला) 5.वाद्य संगीत (सितार) 6.अंग्रेजी 7.योग	**उत्तर मध्यमा (विज्ञान वर्ग)** 1. अनिवार्य संस्कृत 2. प्राच्य विज्ञान 3. हिन्दी/नेपाली /पालि /प्राकृत 4. भौतिक विज्ञान 5. रसायन विज्ञान 6. जीव विज्ञान/गणित 7. कम्प्यूटर विज्ञान/ अंग्रेजी **उत्तर मध्यमा (वाणिज्य वर्ग)** 1. अनिवार्य संस्कृत 2. प्राच्य वाणिज्य 3. हिन्दी/नेपाली /पालि /प्राकृत 4. व्यवसाय अध्ययन 5. लेखाशास्त्र 6. गणित/अर्थशास्त्र 7. कम्प्यूटर विज्ञान/ अंग्रेजी

अनिवार्यसंस्कृतम्

पूर्वमध्यमा द्वितीयखण्डः

157- अनिवार्यसंस्कृतम् **पूर्णांकाः-**70

(i) खण्ड –क

क) मूलरामायणम् (बालकाण्डस्य प्रथमः सर्गः) 10

ख) शिवराजविजयः (प्रथमविरामस्य प्रथमो निश्वासः) 10

ग) छन्दसां लक्षणोदाहरणज्ञानम्- 15
द्रुतविलम्बितम्, मन्दाक्रान्ता, शिखरिणी, शार्दूलविक्रीडितम्,
मालिनी, तोटकम्, प्रहर्षिणी, हरिणी

(ii) **खण्ड –ख**

घ) रचनानुवादकौमुदी (16-30 अभ्यासाः) संस्कृतानुवादः, शब्दरूपाणि, धातुरूपाणि 10

ङ) मध्यसिद्धान्तकौमुदी (कारकः, समासः, भ्वादिगणः) 25

अथवा

लघुसिद्धान्तकौमुदी (तिङन्तप्रकरणमात्रम्)

(व्याकरणेतरच्छात्राणां कृते अनिवार्यम्, व्याकरणच्छात्राणां कृते वैकल्पिकम्)

अथवा

तर्कसंग्रहः पदकृत्यसहितः (अनुमानादिसमाप्तिपर्यन्तः)

अथवा

सांख्यसूत्रम् (तृतीयोऽध्यायः)

उत्तरमध्यमा प्रथमखण्डः

193 अनिवार्यसंस्कृतम् **पूर्णांकाः-100**

(i) खण्ड- क

क) किरातार्जुनीयम् (प्रथमः सर्गः) 25

ख) शब्दालंकाराः भेदोपभेदसहिताः (लक्षणोदाहरणज्ञानम्) 10

ग) गुप्ताशुद्धिप्रदर्शनम् 15
आदितः विंशतिपर्यन्तं श्लोकाः, गुप्ताशुद्धिवाक्यानि (1-100 पर्यन्तम्)

(ii) खण्ड - ख

क) रचनानुवादकौमुदी (31-45 अभ्यासाः) 25
संस्कृतानुवादः, शब्दरूपाणि, धातुरूपाणि, पत्रलेखनम्

ख) मध्यसिद्धान्तकौमुदी (कारक-समासप्रकरणे) 25

अथवा

लघुसिद्धान्तकौमुदी (ण्यन्तकृदन्तप्रकरणं यावत्)

(व्याकरणेतरच्छात्राणां कृते अनिवार्यम्, व्याकरणच्छात्राणां कृते वैकल्पिकम्)

अथवा

न्यायसिद्धान्तमुक्तावली (प्रत्यक्षखण्डः)

अथवा

न्यायसूत्रम् (प्रथमाध्यायस्य प्रथमाह्निकम्)

उत्तरमध्यमा द्वितीयखण्डः

261 - अनिवार्यसंस्कृतम् पूर्णांका:-100

(i) खण्ड –क

क) शुकनासोपदेशः 25

अथवा

स्वप्नवासवदत्तम्

ख) अर्थालंकाराः (लक्षणोदाहरणज्ञानम्) 10

उपमा, रूपकम्, उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्तिः, वक्रोक्तिः, भ्रान्तिमानः, सन्देहः, दृष्टान्तः

ग) गुप्ताशुद्धिप्रदर्शनम् 15

व्युत्पत्तिप्रदर्शनम् (21 – 57 श्लोकपर्यन्तम्), गुप्ताशुद्धिवाक्यानि (101-130 पर्यन्तम्)

(ii) खण्ड -ख

क)- रचनानुवादकौमुदी (46-60 अभ्यासाः) 25

संस्कृतानुवादः, शब्दरूपाणि, धातुरूपाणि, निबन्धलेखनम्

ख) मध्यसिद्धान्तकौमुदी (तद्धितप्रकरणं स्त्रीप्रत्ययप्रकरणं च) 25

अथवा

लघुसिद्धान्तकौमुदी (विभक्त्यर्थप्रकरणत: स्त्रीप्रत्ययप्रकरणं यावत्)

(व्याकरणेतरच्छात्राणां कृते अनिवार्यम्)

अथवा

व्याकरणच्छात्राणां कृते- न्यायसिद्धान्तमुक्तावली (अनुमानखण्डः)

अथवा

वैशेषिकसूत्रम् (प्रथमोऽध्यायः)

ऋग्वेदः

पूर्वमध्यमा द्वितीयखण्डः

159-ऋग्वेदः **पूर्णांका:-70**

(क) ऋग्वेदसंहितायाः सस्वरायाः प्रथममण्डलम्, सूक्तानि - 158, 164, 166, 187, 189 50

द्वितीयमण्डलम्, सूक्तानि - 12, 23-25, 33, 43-44

तृतीयमण्डलम्, सूक्तानि - 7, 27, 37-38, 40-42, 55, 59

चतुर्थमण्डलम्, सूक्तानि - 4

(ख) प्रयोगरत्नानुसारिणी गणेशपूजनादिपुण्याहवाचनप्रयोगो नान्दीश्राद्धप्रयोगश्च- 20

उत्तरमध्यमा प्रथमखण्डः

195-ऋग्वेदः **पूर्णांका:-100**

खण्ड – क **पूर्णांका:-50**

1) ऋग्वेदसंहितायाः सस्वरायाः

चतुर्थमण्डलम्, सूक्तानि - 15, 31-32, 46-50, 57-58

पंचममण्डलम्, सूक्तानि - 4-5, 9-10, 24-25, 39-40, 46-51, 82-84

षष्ठमण्डलम्, सूक्तानि - 1-16, 28, 47

2) प्रयोगरत्नानुसारिणी ग्रहयज्ञप्रयोगपद्धति:

खण्ड – ख **पूर्णांका:-50**

1) ऋग्वेदसंहितायाः सस्वरायाः

षष्ठमण्डलम्, सूक्तानि - 53-58, 61, 68-75

सप्तममण्डलम्, सूक्तानि - 1, 15, 34-35, 41, 46-55, 60-63, 94-104

अष्टममण्डलम्, सूक्तानि - 11, 20, 30-31

2) पिंगलच्छन्दः सूत्रस्य वैदिकप्रकरणम् उदाहरणसहितम्

उत्तरमध्यमा द्वितीयखण्ड:

263 - ऋग्वेद: **पूर्णांका:-100**

खण्ड - क **पूर्णांका:-50**

क) ऋग्वेदसंहितायाः सस्वरायाः

अष्टममण्डलम्, सूक्तानि - 44-48, 80-81, 95

नवममण्डलम्, सूक्तानि - 1, 67, 76, 91, 111, 114

ख) कुण्डमण्डपसिद्धिः

खण्ड – ख **पूर्णांका:-50**

क) ऋग्वेदसंहितायाः सस्वरायाः दशममण्डलम्, सूक्तानि - 9-10, 15, 18, 19, 30-33, 34-37, 46-50, 62-63, 70-75, 125-130, 151-152, 158, 161-163, 170, 173, 174, 177-179, 183-191

ख) ऋग्वेदसंहितायाः प्रथमाध्यायस्य सस्वरः पदपाठः क्रमपाठश्च

शुक्लयजुर्वेद: (माध्यन्दिनशाखीय:)

पूर्वमध्यमा द्वितीयखण्ड:

160-. शुक्लयजुर्वेद: (माध्यन्दिनशाखीय:) **पूर्णांका:-70**

क) शुक्लयजुर्वेदसंहितायाः सस्वरायाः 6-10 अध्यायाः 50

ख) ग्रहशान्तिप्रयोगः, नान्दीश्राद्धान्तः संस्कारभास्करानुसारी 20

उत्तरमध्यमा प्रथमखण्ड:

197 - शुक्लयजुर्वेद: (माध्यन्दिनशाखीय:) **पूर्णांका:-100**

खण्ड-क **पूर्णांका:-50**

क) शुक्लयजुर्वेदसंहितायाः सस्वरायाः (11-17 अध्यायाः)

ख) ग्रहशान्तिप्रयोगः (नान्दीश्राद्धोत्तरमवशिष्ट: ग्रहशान्तिप्रयोगः संस्कारभास्करानुसारी)

खण्ड-ख **पूर्णांका:-50**

क) शुक्लयजुर्वेदसंहितायाः सस्वरायाः (18-21 अध्याया)
ख) पिंगलछन्दस्सूत्रस्य वैदिकच्छन्दःप्रकरणम्उदाहरणसहितम्

उत्तरमध्यमा द्वितीयखण्डः

265 - शुक्लयजुर्वेदः (माध्यन्दिनशाखीयः) **पूर्णांका:-100**

खण्ड – क **पूर्णांका:-50**

क) शुक्लयजुर्वेदसंहितायाः सस्वरायाः (23-30 अध्यायाः)
ख) कुण्डमण्डपसिद्धिः

खण्ड –ख **पूर्णांका:-50**

क) शुक्लयजुर्वेदसंहितायाः सस्वरायाः (31-40 अध्यायाः)
ख) मुहूर्तचिन्तामणेः संस्कारप्रकरणम्

कृष्णयजुर्वेदः (तैत्तिरीयशाखीयः)

पूर्वमध्यमा द्वितीयखण्डः

161- कृष्णयजुर्वेदः (तैत्तिरीयशाखीयः) पूर्णांका:-70

क) तैतिरीयसंहितायाः सस्वरायाः द्वितीयं काण्डम् 50
ख) हिरण्यकेशीया आपस्तम्बीया वा पुण्याहवाचनपद्धतिः 20

उत्तरमध्यमा प्रथमखण्डः

199 - कृष्णयजुर्वेदः (तैत्तिरीयशाखीयः) **पूर्णांका:-100**

खण्ड-क **पूर्णांका:-50**

क) तैत्तिरीयसंहितायाः सस्वरायाः तृतीयं काण्डम्
ख) हिरण्यकेशीयः आपस्तम्बीयो वा ग्रहशान्तिप्रयोगः

खण्ड-ख **पूर्णांका:-50**

क) तैत्तिरीयसंहितायाः सस्वरायाः चतुर्थं काण्डम्
ख) पिंगलछन्दःसूत्रस्य वैदिकच्छन्दःप्रकरणम् उदाहरणसहितम्

उत्तरमध्यमा द्वितीयखण्डः

267 - कृष्णयजुर्वेदः (तैत्तिरीयशाखीयः) **पूर्णांका:-100**

खण्ड - क **पूर्णांका:-50**

क) तैत्तिरीयशाखाया: सस्वरायाः पंचमकाण्डम्
ख) कुण्डमण्डपसिद्धिः

खण्ड - ख **पूर्णांका:-50**

क) तैत्तिरीयशाखाया: सस्वरायाः षष्ठं काण्डम्

ख) तैत्तिरीयसंहितायाः नमकचमकाध्याययोः पदक्रमजटाघनपाठाः

सामवेदः

पूर्वमध्यमा द्वितीयखण्डः

162- सामवेदः **पूर्णांका:-70**

-क) सामवेदसंहितायाः सस्वराया: पूर्वार्चिकस्य 3-4 प्रपाठकौ 50

ख) ग्रामगेयगानस्य आग्नेयपर्वम्(सम्पूर्णम्) 20

उत्तरमध्यमा प्रथमखण्डः

201- सामवेदः **पूर्णांका:-100**

खण्ड – क **पूर्णांका:-50**

क) सामवेदसंहितायाः सस्वरायाः पूर्वार्चिकस्य 5-6 प्रपाठकौ

ख) आरण्यगानस्यार्कपर्व:

खण्ड – ख **पूर्णांका:-50**

क) सामवेदसंहितायाः सस्वरायाः आरण्यकाण्डादारभ्य उत्तरार्चिकस्य 1-3 प्रपाठकाः

ख) पिंगलछन्द:सूत्रस्य वैदिकच्छन्दः प्रकरणम् उदाहरणसहितम्

उत्तरमध्यमा द्वितीयखण्डः

269 - सामवेदः **पूर्णांका:-100**

खण्ड – क **पूर्णांका:-50**

क) सामवेदसंहितायाः सस्वरायाः उत्तरार्चिकस्य 4 –6 प्रपाठका:

ख) कुण्डमण्डपसिद्धिः

खण्ड – ख **पूर्णांका:-50**

क) सामवेदसंहितायाः सस्वरायाः उत्तरार्चिकस्य 7-9 प्रपाठका:

ख) सुबोधिनीपद्धतिः आदितः कौतुकबन्धप्रयोगान्ता

अथर्ववेदः

पूर्वमध्यमा द्वितीयखण्डः

163 - अथर्ववेदः **पूर्णांका:-70**

क) अथर्ववेदसंहितायाः सस्वरायाः 3-4 काण्डे 50

ख) प्रयोगरत्नानुसारिणी वरणान्ता पद्धतिः अथर्ववेदीयपुण्याहवाचनमधुपर्कप्रयोगसंहिता 20

उत्तरमध्यमा प्रथमखण्डः

203 - अथर्ववेदः **पूर्णांकाः-100**

खण्ड – क **पूर्णांकाः-50**

क) अथर्ववेदसंहितायाः सस्वरायाः पञ्चमकाण्डम्

ख) अथर्ववेदीया कुशकण्डिका

खण्ड – ख **पूर्णांकाः-50**

क) अथर्ववेदसंहितायाः सस्वरायाः षष्ठकाण्डम्

ख) पिंगलछन्दःसूत्रस्य वैदिकच्छन्दः प्रकरणम् उदाहरणसहितम्

उत्तरमध्यमा द्वितीयखण्डः

271 - अथर्ववेदः **पूर्णांकाः-100**

खण्ड –क **पूर्णांकाः-50**

क) अथर्ववेदसंहितायाः सस्वरायाः 7-8 काण्डे

ख) कुण्डमण्डपसिद्धिः

खण्ड - ख **पूर्णांकाः-50**

क) अथर्ववेदसंहितायाः सस्वरायाः 9-12 काण्डानि

ख) अथर्ववेदसंहितायाः प्रथमकाण्डस्य पदपाठः

आयुर्वेदः

पूर्वमध्यमा द्वितीयखण्डः

174 - आयुर्वेदः **पूर्णांकाः-70**

खण्ड- क) अष्टांगहृदयम् 50

1. रोगानुत्पादनीय (चतुर्थोऽध्यायः)
2. अन्नस्वरूपविज्ञानीयः

खण्ड-ख) वैद्यशतश्लोकी (51 - अन्तपर्यन्तम्) 20

उत्तरमध्यमा प्रथमखण्डः

225 - आयुर्वेदः **पूर्णांकाः-100**

खण्ड – क **पूर्णांकाः-50**

क) अष्टांगहृदयम् (अन्नरक्षाध्यायः)

ख) योगशतम्- **(1-50 श्लोकाः)**

खण्ड-ख **पूर्णांका:-50**

ग) अजीर्णामृतमंजरी **(सम्पूर्णम्)**

उत्तरमध्यमा द्वितीयखण्डः

293 - आयुर्वेदः **पूर्णांका:-100**

खण्ड - क **पूर्णांका:-50**

क) अष्टांगहृदयम् 30

1. मात्राशितिः
2. शोधनादिगण:

ख) योगशतम्- (51- अन्तपर्यन्तम्) 20

खण्ड – ख **पूर्णांका:-50**

आयुर्वेदमहोदधिः (प्रारम्भतः एकादशवर्गाः)

प्राचीनव्याकरणम्

पूर्वमध्यमा द्वितीयखण्डः

164 - प्राचीनव्याकरणम् **पूर्णांका:-70**

क) काशिकावृत्तिः (तृतीयोऽध्यायः) (वार्तिककारिकांशवर्जिता) 40

अथवा

अष्टाध्यायीभाष्यम्- (तृतीयोऽध्यायः) प्रथमावृत्तिः

ख) अष्टाध्यायी (तृतीयोऽध्यायः) सूत्रपाठकण्ठस्थीकरणम् 15

ग) लिंगानुशासनवृत्तिः (निर्दिष्टशब्देषु ससूत्रं लिंगपरिचयः) 15

उत्तरमध्यमा प्रथमखण्डः

205 -प्राचीनव्याकरणम् **पूर्णांका:-100**

खण्ड – क **पूर्णांका:-50**

क) अष्टाध्यायीभाष्यम्- (चतुर्थोऽध्यायः) प्रथमावृत्तिः/ काशिकावृत्तिः (चतुर्थोऽध्यायः) (वार्तिककारिकांशवर्जिता)

ख) आख्यातिकः (भ्वादिगणः अदादिगणश्च, चिताः धातवः)

(भू, सत्तायाम्। एध वृद्धौ। अञ्चु, गतिपूजनयोः। वाछि, इच्छायाम्। कमु, कान्तौ। जि, जये। बृहि, वृद्धौ। शुभ दीप्तौ। भृञ्, भरणे। पा, पाने। घ्रा, गन्धोपादाने। दाण्, दाने। स्मृ, चिन्तायाम्। श्रु, श्रवणे। डुलभष्, प्राप्तौ। णम, प्रह्वत्वे शब्दे च। गम्लृ, गतौ। दृशिर्, प्रेक्षणे। डुपचष्, पाके। यज, देवपूजासंगतिकरणदानेषु। वस, निवासे। अद, भक्षणे। हन, हिंसागत्योः। द्विष,

अप्रीतौ। शीङ् स्वप्ने। ष्टुञ्, स्तुतौ। ब्रूञ्, व्यक्तायां वाचि। इङ्, अध्ययने। वच, परिभाषणे। विद, ज्ञाने। अस, भुवि। जागृ, निद्राक्षये।)

ग) धातुपाठः (भ्वादिगणः अदादिगणश्च)– धात्वर्थमात्रनिर्देशः

घ) सन्धिविषयःविगृहीतेषु पदेषु सन्धिकार्यम्, सन्धिपदेषु विग्रहकार्यप्रदर्शनम्

खण्ड – ख **पूर्णांका:-50**

क) काशिकावृत्तिः (पंचमोऽध्यायः) (वार्तिककारिकांशवर्जिता) अथवा
अष्टाध्यायीभाष्यम्- (पञ्चमोऽध्यायः) प्रथमावृत्तिः

ख) उणादिकोषः (प्रथमद्वितीयपादौ)

ग) धातुरूपभेदकाव्यम् कारिकाकण्ठस्थीकरणम्, क्रियारूपेषु धातुनिर्देशः

उत्तरमध्यमा द्वितीयखण्डः

273 - प्राचीनव्याकरणम् **पूर्णांका:-100**

खण्ड – क **पूर्णांका:-50**

क) अष्टाध्यायीभाष्यम् (षष्ठोऽध्यायः - स्वरप्रकरणवर्जम्) - प्रथमावृत्तिः/काशिकावृत्तिः
षष्ठोऽध्यायः (वार्तिककारिकांशवर्जिता)

ख) आख्यातिकः (जुहोत्यादिगणादारभ्य चुरादिगणपर्यन्तम्, चिताः धातवः)
(हु दानादनयोः आदाने चेत्येके। ञिभी, भये। पॄञ्, पालनपूरणयोः। डुभृञ्, धारणपोषणयोः। माङ्, माने शब्दे च। डुदाञ्, दाने। डुधाञ्, धारणपोषणयोः। दिवु, क्रीडाविजिगीषाव्यवहारद्युति-स्तुतिमोदमदस्वप्नकान्तिगतिषु। नृती, गात्रविक्षेपे। जनी, प्रादुर्भावे। विद, सत्तायाम्। बुध, अवगमने। षुञ्, अभिषवे। चिञ्, चयने। शक्लृ, शक्तौ। तुद, व्यथने। नुद, क्षिप, प्रेरणे। प्रच्छ, ज्ञीप्सायाम्। मुच्लृ, मोचने। कृती, छेदने। रुधिर्, आवरणे। पिष्लृ संचूर्णने। भुज, पालनाभ्यवहारयोः। तनु, विस्तारे। डुकृञ्, करणे। डुक्रीञ्, द्रव्यविनिमये। प्रीञ्, तर्पणे कान्तौ च। ग्रह, उपादाने। चुर, स्तेये। चिञ्, चयने।)

ग) धातुपाठः (जुहोत्यादिगणादारभ्य चुरादिगणपर्यन्तम्)– धात्वर्थमात्रनिर्देशः

घ) सामासिकः (पदेषु सविग्रहं समासनिर्देशः)

खण्ड – ख **पूर्णांका:-50**

क) काशिकावृत्तिः (वार्तिककारिकांशवर्जिता) -सप्तमाष्टमाध्यायौ - स्वरप्रकरणवर्जम्
अथवा
अष्टाध्यायीभाष्यम् (सप्तमाष्टमाध्यायौ - स्वरप्रकरणवर्जम्) - प्रथमावृत्तिः

ख) नामिकः

नव्यव्याकरणम्

पूर्वमध्यमा द्वितीयखण्डः

165 - नव्यव्याकरणम् **पूर्णांका:-70**

क) सिद्धान्तकौमुदी

1) स्त्रीप्रत्ययः

2) कारकप्रकरणम् 20
3) समासाश्रयविधिप्रकरणतः अपत्याधिकारप्रकरणपर्यन्तम् 40

उत्तरमध्यमा प्रथमखण्डः

207 - नव्यव्याकरणम् **पूर्णांकाः-100**

खण्ड – क **पूर्णांकाः-50**

क) सिद्धान्तकौमुदी (शैषिकादि द्विरूक्त प्रक्रियान्त भागः)

खण्ड – ख **पूर्णांकाः-50**

क) सिद्धान्तकौमुदी (भ्वादितः जुहोत्यादि पर्यन्तम्)

उत्तरमध्यमा द्वितीयखण्डः

275- नव्यव्याकरणम् **पूर्णांकाः-100**

खण्ड – क **पूर्णांकाः-50**

सिद्धान्तकौमुदी (दिवादिगणादारभ्य नामधात्वन्तो भागः)

खण्ड – ख **पूर्णांकाः-50**

सिद्धान्तकौमुदी (कण्ड्वादिप्रकरणमारभ्य उणादिहीनकृदन्तान्तो भागः)

साहित्यम्

पूर्वमध्यमा द्वितीयखण्डः

166 - साहित्यम् **पूर्णांकाः-70**

क) चन्द्रालोकः (सम्पूर्णः) 50
ख) किरातार्जुनीयम् (द्वितीयः सर्गः) 20

उत्तरमध्यमा प्रथमखण्डः

209 - साहित्यम् **पूर्णांकाः-100**

खण्ड- क **पूर्णांकाः-50**

क) दशकुमारचरितम् (पूर्वपीठिका)

ख) रघुवंशमहाकाव्यम् (13-14 सर्गौ)

खण्ड-ख **पूर्णांका:-50**

क) तर्कसंग्रहः (न्यायबोधिनी टीका) - प्रत्यक्षखण्डः

उत्तरमध्यमा द्वितीयखण्डः

277 - साहित्यम् **पूर्णांका:-100**

खण्ड – क **पूर्णांका:-50**

क) काव्यमीमांसा (1-5 अध्यायाः)

ख) वृत्तरत्नाकरः (1-3 अध्यायाः)

तृखण्ड – ख **पूर्णांका:-50**

किरातार्जुनीयम् (3-4 सर्गौ)

न्यायः

पूर्वमध्यमा द्वितीयखण्डः

168 - न्यायः **पूर्णांका:-70**

क) न्यायसिद्धान्तमुक्तावल्याः अनुमानखण्डमात्रम्

उत्तरमध्यमा प्रथमखण्डः

213 - न्यायः **पूर्णांका:-100**

खण्ड – क **पूर्णांका:-50**

क) न्यायसिद्धान्तमुक्तावली किरणावलीसहिता (प्रत्यक्षखण्डः)

खण्ड- ख **पूर्णांका:-50**

क) न्यायबिन्दुः (प्रत्यक्षखंडः)

उत्तरमध्यमा द्वितीयखण्डः

281 - न्यायः **पूर्णांका:-100**

खण्ड - क **पूर्णांका:-50**

न्यायसिद्धान्तमुक्तावली (अनुमानोपमानशब्दखंडाः) किरणावलीसहिता

खण्ड – ख **पूर्णांका:-100**

न्यायबिन्दु: (अनुमानत: समाप्तिं यावत्)

दर्शनम्

पूर्वमध्यमा द्वितीयखण्ड:

167 - दर्शनम् **पूर्णांका:-70**

क) तर्कभाषा (सम्पूर्णम्)

उत्तरमध्यमा प्रथमखण्ड:

211- दर्शनम् **पूर्णांका:-100**

खण्ड – क **पूर्णांका:-50**

क) तर्कसंग्रह: न्यायबोधिनी (प्रत्यक्षखंडः)

खण्ड-ख **पूर्णांका:-50**

क) सांख्यकारिका (अर्थसहितम्)

उत्तरमध्यमा द्वितीयखण्ड:

279 - दर्शनम् **पूर्णांका:-100**

खण्ड – क **पूर्णांका:-50**

न्यायबिन्दु: (प्रत्यक्षखंडः)

खण्ड – ख **पूर्णांका:-100**

योगदर्शनम् (प्रथमद्वितीयपादौ)

ज्यौतिषम्

पूर्वमध्यमा द्वितीयखण्ड:

170 - ज्यौतिषम् **पूर्णांका:-70**

क) भास्करीयबीजगणितम्

उत्तरमध्यमा प्रथमखण्ड:

217 - ज्यौतिषम् **पूर्णांका:-100**

खण्ड –क **पूर्णांका:-50**

क) रेखागणितस्य 1-2 अध्यायौ (सुधाकर द्विवेदी)

ख) मुहूर्त्तचिन्तामणिः (गोचरप्रकरणात् यात्राप्रकरणपर्यन्तम्)

खण्ड - ख **पूर्णांका:-5 0**

क) ग्रहलाघवं रविचन्द्रस्पष्टाधिकार:

ख) लघुजातकम्

उत्तरमध्यमा द्वितीयखण्डः

285 - ज्यौतिषम् **पूर्णांका:-100**

खण्ड - क **पूर्णांका:-50**

क) रेखागणितस्य ३-४ अध्यायौ

ख) मुहूर्त्तचिन्तामणिः राज्याभिषेकात् अवशिष्टो भागः

खण्ड – ख **पूर्णांका:-50**

क) ग्रहलाघवं पंचतारास्पष्टीकरणादारभ्य सूर्यग्रहणान्तम्

ख) लघुपाराशरी

जैनदर्शनम्

पूर्वमध्यमा द्वितीयखण्डः

171 - जैनदर्शनम् **पूर्णांका:-70**

क) परीक्षामुखसूत्रम् (आ. माणिक्यनन्दिप्रणीतम्)

उत्तरमध्यमा प्रथमखण्डः

219 - जैनदर्शनम् **पूर्णांका:-100**

खण्ड – क **पूर्णांका:-5 0**

क) द्रव्यसंग्रहः (नेमिचन्द्रमुनिकृतः)

खण्ड –ख **पूर्णांका:-50**

क) न्यायदीपिका (धर्मभूषणयतिकृता)

उत्तरमध्यमा द्वितीयखण्डः

287 - जैनदर्शनम् **पूर्णांका:-100**

खण्ड – क **पूर्णांका:-50**

भिक्षन्यायकर्णिका (आ. तुलसीकृता)

खण्ड –ख **पूर्णांका:-50**

तत्वार्थसूत्रम् (आ. उमास्वामी)

थेरवादबौद्धदर्शनम्

पूर्वमध्यमा द्वितीयखण्डः

169 - थेरवादबौद्धदर्शनम् **पूर्णांका:-70**

क) दीघनिकायो (पठमो भागो)- सामञ्ञफलसुत्तम्, अम्बट्ठसुत्तम् 40

ख) मज्झिमनिकायो- सम्मादिट्ठिसुत्तम् 30

उत्तरमध्यमा प्रथमखण्डः

215 - थेरवादबौद्धदर्शनम् **पूर्णांका:-100**

खण्ड-क **पूर्णांका:-50**

क) अभिधर्मकोशः प्रथमकोशस्थानम् (मूलमात्रम्)

ख) वज्रच्छेदिका प्रज्ञापारमिता (मूलमात्रम्)

खण्ड - ख **पूर्णांका:-50**

क) अभिधम्मत्थसंगहो 1-4 परिच्छेदाः (मूलमात्रम्)

उत्तरमध्यमा द्वितीयखण्डः

283 - थेरवादबौद्धदर्शनम् **पूर्णांका:-100**

खण्ड – क **पूर्णांका:-50**

बोधिचर्यावतारः 1-6 परिच्छेदपर्यन्तः

खण्ड – ख **पूर्णांका:-50**

मिलिन्दपञ्हो- बाहिरकथा, लक्खणविमतिच्छेदपञ्हो

पुराणेतिहासम्

पूर्वमध्यमा द्वितीयखण्डः

172 - पुराणेतिहासम् **पूर्णांकाः-70**

क) महाभारतस्य आदिपर्वणः सभापर्वणः वा प्रथमतः तृतीयपर्वपर्यन्तमाख्यानम् 25

ख)युगपुराणे वाल्मीकि-वसिष्ठ-व्यास-सूत-शौनकादीनां परिचयः 25

ग) श्रीमद्भवद्गीतायाः प्रथमद्वितीयाध्यायौ 20

उत्तरमध्यमा प्रथमखण्डः

221 - पुराणेतिहासम् **पूर्णांकाः-100**

खण्ड क **पूर्णांकाः-50**

क) विष्णुपुराणस्य प्रथमद्वितीयसर्गौ

अथवा

श्रीमद्भागवतमहापुराणस्य प्रथमस्कन्धस्य प्रथमाध्यायतः पञ्चमाध्यायपर्यन्तम्

खण्ड - ख **पूर्णांकाः-50**

क) वाल्मीकिरामायणस्य सुन्दरकाण्डे द्वितीयसर्गतः दशमसर्गपर्यन्तम्

उत्तरमध्यमा द्वितीयखण्डः

289 - पुराणेतिहासम् **पूर्णांकाः-100**

खण्ड – क **पूर्णांकाः-50**

क) श्रीमद्भगवद्गीतायाः दशमाध्ययतः अष्टादशाध्यायपर्यन्तम्

ख) विष्णुपुराणस्य तृतीय-चतुर्थसर्गौ

खण्ड –ख **पूर्णांकाः-50**

क) विष्णुपुराणस्य पंचमोंऽशः

ख) प्राचीनभारतेतिहासः (महाजनपदकालात् गुप्तकालपर्यन्तम्)

प्राकृतं तथा जैनागमः

पूर्वमध्यमा द्वितीयखण्डः

173 - प्राकृतं तथा जैनागमः **पूर्णांकाः-70**

क) नायाधम्म कहाओ (प्रथमश्रुतस्कन्धस्य सप्तमाध्ययनम्)

अथवा

पाइअ गज्जसंगहो वीयो भाओ (कथा 1-10) (प्रो- राजाराम जैन द्वारा सम्पादित)

उत्तरमध्यमा प्रथमखण्डः

223 - प्राकृतं तथा जैनागमः **पूर्णांका:-100**

खण्ड - क **पूर्णांका:-50**

क) उत्तरज्झयणम् (उत्तराध्ययन 23 वां केसिगोमिज्जं अध्ययनम्)

खण्ड – ख **पूर्णांका:-50**

क) कार्तिगेयाणुवेक्खा (कार्तिकेयानुप्रेक्षा गाथा 1-101)

उत्तरमध्यमा द्वितीयखण्डः

291 - प्राकृतं तथा जैनागमः **पूर्णांका:-100**

खण्ड – क **पूर्णांका:-50**

रयणसारो (कुन्दकुन्दाचार्यकृतं सम्पूर्णम्)

खण्ड – ख **पूर्णांका:-50**

दसवेआलियं (दशवैकालिक 1-15 पाठ)

पालि

पूर्वमध्यमा द्वितीयखण्डः

187 – पालि - **पूर्णांका:-70**

क) धम्मपदम्- यमकवग्गो, पापवग्गो, दण्डवग्गो, जरावग्गो	30
ख) उदानम्- बोधिवग्गो, मुचलिन्दवग्गो	30
ग) अनुवादः- हिन्दीभाषातः पालिभाषायाम्	10

उत्तरमध्यमा प्रथमखण्डः

246 - पाली- **पूर्णांका:-100**

क) दण्डी-सुखकारी-आयु-धेनु-मातु-पितु-सत्थ-सब्ब-अम्ह-तुम्ह-किं-यु-गच्छन्तशब्दानां रूपाणि। भ्वादि-रुधादि-दिवादि-तुदादि-तनादि-चुरादि-स्वादिधातूनां लट्-लोट्-लिट्-

लिङ्लकारेषु रूपाणि। 50
ख) बालावतारो (पालिव्याकरणम्) आदितः समासकप्पपर्यन्तम्। 25
ग) अनुवादः- हिन्दीभाषातः पालिभाषायाम् 25

उत्तरमध्यमा द्वितीयखण्डः

317 - पाली- पूर्णांकाः-100

क) दीघनिकायो (पठमो भागों)- ब्रम्हजालसुत्तं 50
ख) धम्मपदं- पण्डितवग्गो, ब्राम्हणवग्गो, भिक्खुवग्गो, बुद्धग्गो 25
ग) व्याकरणं- सन्धिः, तद्धितः, कृदन्तश्च। 25

नेपाली

पूर्वमध्यमा द्वितीयखण्डः

183 - नेपाली पूर्णांकाः-70

(क) नेपाली गद्यचन्द्रिका भाग 1, लेखक-दिनेशचन्द्र रेग्मी-प्र0-रेग्मीबन्धु, नेपाली पुस्तक सदन काठमाण्डू।
(ख) प्रबन्धलता (अध्ययन हाम्रा मनीषी, गौतम बुद्ध, र भानुभक्तको दार्शनिक पक्ष, नेपाल र संस्कृत शिक्षा)
(ग) नेपाली सामाजिक कहानी (अन्तरे भाग), ले0-भीमनिधि तिवारी, तिवारी प्रकाशन, काठमाण्डू नेपाल।

सहायक ग्रन्थः-

(1) मध्यचन्द्रिका, ले0-सोमनाथ सिग्देल-पुस्तक संसार, भोटाहिटी, काठमाण्डू।
(2) रचनाकेशर, ले0- गोपाल पाण्डे, साझा प्रकाशन, काठमाण्डू, नेपाल।
(3) अनुवाद चन्द्रिका भाग 2-सोमनाथ सिग्देल-पुस्तक संसार, भोटाहिटी, काठमाण्डू।

1. व्याख्या 15
2. लेखक परिचय 10
3. अनुवाद संस्कृतबाट नेपाली 10
4. अनुवाद नेपालीबाट संस्कृत 10
5. सहायक ग्रन्थबाट 10
6. पाठ्यांशबाट प्रश्न 15

उत्तरमध्यमा प्रथमखण्डः

245 - नेपाली – पूर्णांकाः-100

(क) नेपाली पद्यचन्द्रिकाभाग 2, ले०- जगदीशचन्द्र रेग्मी, रेग्मीबन्धु,नेपाली पुस्तक सदन , दुर्गाघाट वाराणसी.
(ख) भिखारी (भिखारी, बादल, यात्रि, वन, प्रश्नोत्तर,बालक-काल,धासी मात्र) ले०- लक्ष्मीप्रसाद देवकोटा, साझा प्रकाशन, काठमांडू, नेपाल.

(ग) नैवेद्य, ले०-धरणीधर कोईराला, नेपाली साहित्य संमेलन, दार्जिलिंग, बंगाल.

अथवा

मुक्त सुदामा- युद्धप्रसाद मिश्र, प्र०- स्वयं लेखक, मुमुक्षु भवन, अस्सी, वाराणसी.

सहायकग्रंथनामानि-

(1) छन्द र अलंकार, ले०-डिल्लीराम तिंसिना, माधव भंडारी, प्र०- पुस्तक संसार, भोटाहिनी, नेपाल.

(2) अनुवाद चन्द्रिका भाग-3, सोमनाथ सिग्देल, प्र०- पुस्तक संसार, भोटाहिनी, काठमांडू, नेपाल.

1.	व्याख्या	15
2.	लेखक परिचय	10
3.	अनुवाद संस्कृतबाट नेपाली	15
4.	अनुवाद नेपालीबाट संस्कृत	15
5.	सहायक ग्रन्थबाट	20
6.	पाठ्यांशबाट प्रश्न	25

उत्तरमध्यमा द्वितीयखण्डः

304 - नेपाली – **पूर्णांका:-100**

पाठ्यग्रन्थ-

1. नेपाली गद्य चन्द्रिका भाग-2
2. पौराणिक कहानी
3. सहनशीला सुशीला

सहायकग्रन्थ-

1. नेपाली साहित्यिको विवेचना
2. नेपाली भाषा र साहित्य
3. अनुवाद चन्द्रिका, भाग-4

1.	व्याख्या	15
2.	लेखक परिचय	10
3.	अनुवाद संस्कृतबाट	15
4.	अनुवाद नेपालीबाट संस्कृत	15
5.	सहायक ग्रन्थबाट	20
6.	पाठयांशबाट प्रश्न	25

प्राकृतम्

पूर्वमध्यमा द्वितीयखण्डः

188- प्राकृतम् **पूर्णांकाः-70**

क) रचनानुवादः व्याकरणं च।

ख) प्राकृतगद्यपाठाः

(प्राकृत स्वयं शिक्षक 23-43 पाठाः तथा च गज्जसंगहो 1, 5, 9, 10

उत्तरमध्यमा प्रथमखण्डः

247 - प्राकृतम् – **पूर्णांकाः-100**

क) रचनानुवादः व्याकरणं च (प्राकृत स्वयं शिक्षक 44-63 पाठाः)

ख) प्राकृतपद्यपाठाः (प्राकृतप्रवेशिका- डॉ. कोमलचन्द्र जैन-सुभाषितानि, सज्जन-दुर्जनचर्चा, धर्ममाहात्म्यम्, शीर्षकपाठाः)

उत्तरमध्यमा द्वितीयखण्डः

318- प्राकृतम् – **पूर्णांकाः-100**

क) रचनानुवादः व्याकरणं च (प्राकृत स्वयं शिक्षक 64-89 पाठाः)

ख) प्राकत-गद्यपद्यपाठाः (प्राकृत प्रवेशिका, बूल्नर, भाग-2, पाठ- 1, 2, 9)

इतिहास-पुराण एवं संस्कृति

पूर्वमध्यमा द्वितीयखण्डः

186 - इतिहास-पुराण एवं संस्कृति **पूर्णांकाः-70**

महाभारतकालीन घटनाओं एवं व्यक्तियों का परिचय-

क) 1. पाण्डव एवं कौरवों की उत्पत्ति कथा, 2. जनमेजय का नागयज्ञ, 3. युधिष्ठिर का यज्ञ, 4. पाण्डवों का वनवास, 5. यक्ष-युधिष्ठिर सम्वाद, 6. नलोपाख्यान, 7. शकुन्तलोपाख्यान, 8. कीचकवध कथा, 9. मत्स्यवेध, 10. द्रौपदी स्वयम्वर, 11. विदुलोपाख्यान 12. लाक्षागृह, 13. द्यूतक्रीड़ा, 14. कच-देवयानी 15. कर्ण का दान, 16. अभिमन्युवध, 17. भारतयुद्ध, 18. भीष्म-परशुराम युद्ध, 19. परीक्षित जन्म, 20. अश्वमेध यज्ञ, 21. जयद्रथवध, 22. भीष्म का उपदेश, 23. पाण्डवों का स्वर्गारोहण 24. चक्रव्यूह, 25. द्रोणाचार्य और भीष्म का स्वर्गवास।

ख) 1. व्यास, 2. शान्तनु, 3. भीष्म, 4. धृतराष्ट्र, 5. पाण्डु, 6. युधिष्ठिर, 7. भीम, 8. अर्जुन, 9. नकुल और सहदेव, 10. कर्ण, 11. दुर्योधन, 12. दुःशासन, 13. अभिमन्यु, 14. परशुराम, 15. द्रोणाचार्य, 16. अश्वत्थामा, 17. विदुर, 18. जयद्रथ, 19. आस्तीकमुनि, 20. श्रीकृष्ण, 21. शकुनि।

ग) 1. द्रौपदी, 2. गान्धारी, 3. कुन्ती, 4. मत्स्योदरी (योजन-गन्धा), 5. विदुला।

उत्तरमध्यमा प्रथमखण्डः

248 - इतिहास, पुराण एवं संस्कृति **पूर्णांका:-100**

1) पौराणिक इतिहास- अष्टादश पुराण परिचय तथा पुराणों के रचयिता।

2) पुराणकालीन प्रमुख आख्यानों एवं प्रमुख व्यक्तियों का सामान्य परिचय।

क) 1. व्यासचरित्र, 2. ध्रुवचरित्र, 3. प्रहलाद चरित्र, 4. ययातिचरित्र 5. बेन तथा पृथु का आख्यान, 6. सगरोपाख्यान, 7. गंगावतरण, 8. हरिश्चन्द्रोपाख्यान, 9. पुरूरवा-उर्वशी आख्यान, 10. शर्मिष्ठा और देवयानी, 11. नल-दमयन्ती की कथा, 12. स्यमन्तक मणि की कथा, 13. कालियादहन कथा, 14. कपोतोपाख्यान, 15. बाणासुर की कथा, 16. निमिचरित, 17. मनु की कथा।

ख) 1. श्रीकृष्ण, 2. व्यास, 3. सूत, 4. शौनक, 5. वशिष्ठ, 6. विश्वामित्र, 7. परशुराम, 8. भगीरथ, 9. रन्तिदेव, 10. शिवि, 11. नहुष, 12. अम्बरीष, 13. अजामिल, 14. ययाति।

ग) 1. अहिल्या, 2. यशोदा, 3. रुक्मिणी, 4. सत्यभामा, 5. उषा, 6. कुब्जा।

उत्तरमध्यमा द्वितीयखण्डः

314 - इतिहास-पुराण एवं संस्कृति **पूर्णांका:-100**

1. पौराणिक धर्म एवं संस्कृति

2. पौराणिक कथाएँ

क) 1. वर्णाश्रमधर्म, 2. संस्कार, 3. अवतार, 4. शिक्षा, 5. समाज, 6. परिवार, 7. नारी की दशा।

ख) 1. अमृतमन्थन एवं रत्नोत्पति, 2. जमदग्नि और विश्वामित्र, 3. जड़भरत-का आख्यान, 4. सौभरि-चरित्र, 5. श्रीकृष्ण की बाललीला, 6. कच-देवयानी की कथा, 7. गजेन्द्र-मोक्ष, 8. वृन्दोपाख्यान, 9. नचिकेतोपाख्यान, 10. पुरंजनोपाख्यानम्, 11. कृष्णावतारकथा, 12. सुदामाचरित्र, 13. सावित्री-सत्यवान्कथा, 14. त्रिशंकुचरितम्, 15. इलोपाख्यानम्, 16. अगस्त्योपाख्यानम्, 17. अवधूतोपाख्यानम्, 18. पूतनावधकथा, 19. शिशुपालवधकथा, 20. गोकर्णोपाख्यानम्, 21. दक्षयज्ञविध्वंस कथा, 22. स्यमन्तकमणि की कथा, 23. मुचुकुन्द की कथा, 24. यदुकुलसंहार का आख्यान, 25. विन्ध्योपाख्यानम्।

ग) 1. इन्द्र, 2. इन्द्रद्युम्न, 3. कद्रू और विनता, 4. कालयवन, 5. जनक, 6. साम्ब, 7. धुन्धुमार।

पौरोहित्यम्

पूर्वमध्यमा द्वितीयखण्डः

182 - पौरोहित्यम् **पूर्णांका:-70**

क) सर्वतोभद्रपूजनविधिः समन्त्रकः (कारिकासहितः)	20
ख) लिंगतोभद्रपूजनविधिः समन्त्रकः (कारिकासहितः)	15
ग) पीठपूजनविधिः, यन्त्रपूजनविधिः, अग्न्युतारणविधिः, प्राणप्रतिष्ठाविधिः	20
घ) ग्रहस्थापनविधिः	15

उत्तरमध्यमा प्रथमखण्डः

236 - पौरोहित्यम् - **पूर्णांका:-100**

क) कुशकण्डिकाप्रयोगविधिः

ख) विवाहसंस्कारविधिः

ग) गर्भाधानसंस्कारविधिः

घ) पुंसवन-सीमन्तोन्नयनसंस्कारविधिः

घ) जातकर्म-नामकरणसंस्कारविधिः

उत्तरमध्यमा द्वितीयखण्डः

305 - पौरोहित्यम् - **पूर्णांका:-100**

1. यज्ञप्रायश्चित्तविधि:
2. यज्ञमण्डपपूजनविधि:
3. अन्नप्राशन-चौलसंस्कारविधि:
4. उपनयन-वेदारम्भ-समावर्तनसंस्कारविधि:
5. पार्वणश्राद्धविधि:

तुलनात्मक-दर्शनम्

पूर्वमध्यमा द्वितीयखण्डः

179 - तुलनात्मक-दर्शनम् (सम्पूर्णानन्द सं0वि0वि0 से मान्य पुस्तक) **पूर्णांका:-70**

दर्शन का स्वरूप, भारतीय दर्शन एवं पाश्चात्य दर्शन की विशेषतायें, भारतीय दर्शन के विभिन्न विभाग, वैदिक और अवैदिक दर्शनों का संक्षिप्त विवरण, चार्वाक न्याय वैशेषिक- सांख्ययोग-मीमांसा वेदान्त का परिचय। पाश्चात्य दर्शन के ग्रीक विचारों का विकासात्मक स्वरूप तथा आधुनिक दर्शन की प्रवृत्तियाँ, देकार्त, लाक एवं काण्ट के संक्षिप्त विचार।

उत्तरमध्यमा प्रथमखण्डः

237- तुलनात्मकदर्शनम् **पूर्णांका:-100**

तर्कशास्त्र निगमनविधि-

क) पाश्चात्य तर्कशास्त्र -

न्यायशास्त्र की परिभाषा, न्यायशास्त्र का विषय-विचार और भाषा, न्यायशास्त्र का अन्य शास्त्रों से सम्बन्ध, न्यायशास्त्र की उपयोगिता विचार के नियम पद और उनका विभाग, पद का गुण और निर्देशवाच्य धर्म-परिभाषा एवं तार्किक (नैयायिक) विभाग, तार्किक या नैयायिक वाक्य, वाक्यों का अर्थ, वाक्य में पदों का विस्तार, अनुमान का स्वरूप और उनके अनेक भेद, वाक्यप्रतिमुखता न्याय वाक्यों के स्वरूप, आकार, संयोग एवं भेद उभयतो-पाश संक्षिप्त-न्याय वाक्य का संक्षिप्त अनुलोमयुक्तिमाला, संक्षिप्त-प्रतिलोम-न्यायमाला, न्याय-वाक्य का और उसकी उपयोगिता, दोष।

ख) भारतीय तर्कशास्त्र- विषय प्रवेशः- न्यायशास्त्र का उद्देश्य और महत्व, न्यायशास्त्र का विकास, प्रमाः- ज्ञान और उसके भेद, प्रमा के लक्षण, प्रमा का विश्लेषण, कारण प्रमाणः- प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द-प्रमा और अन्य विषयः- संशय, विपर्यय, तर्क, कथा, वाद, जल्प, वितण्डा, छल जाति और निग्रहस्थान।

उत्तरमध्यमा द्वितीयखण्डः

306 - तुलनात्मकदर्शनम् **पूर्णांका:-100**

पाठ्यपुस्तकें-

1. पाश्चात्य तर्क विद्या (आागमन विधि) लेखक- प्रो. भोलानाथ राय
2. पाश्चात्य तर्कशास्त्र (आगमन विधि) लेखक- भिक्षु जगदीश कश्यप
3. न्याय प्रवेश लेखक- दिङ्नाग
4. भारतीय तर्कबोध ज्ञानमीमांसा लेखक- प्रो. अनिरुद्ध झा

क) पाश्चात्य तर्कशास्त्र-

विषय प्रवेशः- आगमनमूलक पद्धति का इतिहास आगमन की समस्या, वैज्ञानिक आगमन तथा उसकी विशेषताएँ, विभिन्न प्रकार के आगमन-"यथा कथित" आगमन युक्त आगमन की विधि तथा उसके विभिन्न सोपान, आगमन तथा निगमन का सम्बन्ध, आगमन का महत्त्व, उपयोगिता तथा आवश्यकता, आगमनमूलक न्याय-युक्ति।

ख) भारतीय तर्कशास्त्र- बौद्ध दर्शन के तर्कशास्त्र का संक्षिप्त परिचय।

प्राच्यविज्ञानम्

उत्तरमध्यमा प्रथमखण्डः

227 - प्राच्यविज्ञानम् **पूर्णांका: 100**

क) लीलावती 25

(परिभाषाप्रकरणम्, अभिन्नपरिकर्माष्टकम्, भिन्नपरिकर्माष्टकम्- 1-25 श्लोकपर्यन्तम्)

1) श्लोकव्याख्या- २X७.५=१५

2) श्लोकपूर्तिः- ४X२-५=१०

ख) सूर्यसिद्धान्तः 25

(प्रथमोऽध्यायः- 10- 23 श्लोकपर्यन्तम्, चतुर्थोऽध्यायः- 1- 10 श्लोकपर्यन्तम्)

1) श्लोकव्याख्या-२X७.५=१५

2) श्लोकपूर्तिः- ४X२-५=१०

ग) अष्टाङ्गहृदयम् (सूत्रस्थाने द्वितीयाध्यायः= दिनचर्याध्यायः) 25

1) श्लोकव्याख्या- २X७.५=१५

2) श्लोकपूर्तिः- ४X२-५=१०

घ) जीवनपरिचयः २X१२.५=२५ 25

कणादः, आर्यभट्टः, चरकः, सुश्रुतः, वाग्भट्टः, बौधायनः, ब्रह्मगुप्तः, भास्कराचार्यः, वराहमिहिरः, लगधाचार्यः।

उत्तरमध्यमा द्वितीयखण्डः

295- प्राच्यविज्ञानम् **पूर्णांका:100**

क) आर्यभटीयम् (गोलपादः 1-20 श्लोकपर्यन्तम्) 25

1) श्लोकव्याख्या- २X७.५=१५

2) श्लोकपूर्तिः- ४X२-५=१०

ख) बृहत्संहिता (दकार्गलाध्यायः 1- 30 श्लोकपर्यन्तम्, अवशिष्टस्याध्यायस्य द्रुतपाठः) 25

1) श्लोकव्याख्या- २X७.५=१५

2) श्लोकपूर्तिः- ४X२-५=१०

ग) अष्टाङ्गहृदयम् 25

(सूत्रस्थाने द्रव्यद्रव्यविज्ञानीयाख्ये पंचमाध्याये तोयवर्गः क्षीरवर्गश्च 1- 41 श्लोकपर्यन्तम्)

1) श्लोकव्याख्या- २X७.५=१५

2) श्लोकपूर्तिः- ४X२-५=१०

घ) खगोलीययन्त्रणि वेधशालाश्च- 25

नाडीवलययन्त्रम्, याम्योत्तरीयतुरीययन्त्रम्, सम्राट्पलभायन्त्रम्, शंखयन्त्रम्, चक्रयन्त्रम्, क्रान्तिवृत्तयन्त्रम्, तारामण्डलः, जयपुरवेधशाला, काशी-वेधशाला, जन्तर-मन्तर-वेधशाला (दिल्ली)

1) टिप्पण्यः- २X१२.५=२५

प्राच्यवाणिज्यम्

उत्तरमध्यमा प्रथमखण्डः

228 - प्राच्यवाणिज्यम् पूर्णांका:100

क) शुक्रनीतिः (चतुर्थाध्याये कोशनिरूपणप्रकरणे 1-65 श्लोकपर्यन्तम्) 25

1) श्लोकव्याख्या- २X७.५=१५

2) विषयगतप्रश्नाः- ५X२=१०

ख) मनुस्मृतिः (अष्टमाध्याये 131(75) - 228(141) श्लोकपर्यन्तम्) 25

1) श्लोकव्याख्या- २X७.५=१५

2) विषयगतप्रश्नाः- ५X२=१०

ग) कौटिलीय-अर्थशास्त्रम् 25

(समाहर्त्तृसमुदयप्रस्थापनम्- प्रकरणम्- 22, अध्यायः-6, आकरकर्मान्तप्रवर्तनम्- प्र--28, अ--12, शुल्कव्यवहारः- प्र--38, अ--22, सीताध्यक्षः प्र--40, अ--24)

1) वाक्यखण्डव्याख्या- २X७.५=१५

2) विषयगतप्रश्नाः- ५X२=१०

घ) प्राचीन भारत का धार्मिक, सामाजिक और आर्थिक जीवन 25

-सत्यकेतु विद्यालंकार

पाठ्यक्रमे निर्धारितोंऽशः-

त्रयोदशोऽध्यायः- बौद्धकाल में भारत की आर्थिक दशा

चतुर्दशोऽध्यायः- मौर्यकाल का आर्थिक जीवन

पंचदशोऽध्यायः- मौर्ययुग के पश्चात् भारत का आर्थिक जीवन

1) विषयगतप्रश्नाः- ५X५=२५

उत्तरमध्यमा द्वितीयखण्डः

296- प्राच्यवाणिज्यम् पूर्णांका:100

क) शुक्रनीतिः (चतुर्थाध्याये कोशनिरूपणप्रकरणे 66-128 श्लोकपर्यन्तम्) 25

1) श्लोकव्याख्या- २X७.५=१५

2) विषयगतप्रश्नाः- ५X२=१०

ख) याज्ञवल्क्यस्मृतिः (व्यवहाराध्याये 114-181 श्लोकपर्यन्तम्) 25

1) श्लोकव्याख्या- २X७.५=१५

2) विषयगतप्रश्नाः- ५X२=१०

ग) कौटिलीय-अर्थशास्त्रम् 25

(औपनिधिकम्- प्रकरणम्-68, अध्यायः-12, कर्मकरप्रकल्पः- प्र--70,
अ--14, कारुकरक्षणम्- प्र--76, अ--1, वैदेहकप्रकरणम्- प्र--77, अ--2)

1) वाक्यखण्डव्याख्या- २X७.५=१५

2) विषयगतप्रश्नाः- ५X२=१०

घ) पाणिनिकालीन भारतवर्ष- वासुदेवशरण अग्रवाल 25

पाठ्यक्रमे निर्धारितोंऽशः-

चतुर्थोऽध्यायः- आर्थिक दशा

1) विषयगतप्रश्नाः- ५X५=२५